United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

"देहाती परिवेश में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा: - मिथिलेश्वर की कहानियों के संदर्भ में"

[1]अलजंगि स्वाती
हिंदी विभाग अध्यक्ष ,आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम,
[2]आचार्य नल्ल सत्यन्नारायणा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम ,मोबाइल

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र में समकालीन हिंदी कथा-साहित्य के प्रमुख कथाकार मिथिलेश्वर की कहानियों के माध्यम से देहाती परिवेश में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा का विश्लेषण किया गया है। मिथिलेश्वर की कहानियाँ ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक यथार्थ को चित्रित करते हुए उस अनुभवजन्य ज्ञान को उजागर करती हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोक-जीवन में विकसित हुआ है। देहाती समाज में श्रम-संस्कृति, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, सामूहिक जीवन-बोध, नैतिक मूल्यों और व्यवहारिक बुद्धि के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा सजीव रूप में विद्यमान रहती है।

यह शोध-पत्र यह प्रतिपादित करता है कि मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण पात्र औपचारिक शिक्षा से भले ही वंचित हों, किंतु वे जीवनानुभव से अर्जित ज्ञान, सामाजिक समझ और नैतिक विवेक से समृद्ध हैं। लोक-परंपराएँ, आस्थाएँ, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनाएँ भारतीय ज्ञान प्रणाली के मौलिक तत्वों के रूप में कथा-साहित्य में अभिव्यक्त होती हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मिथिलेश्वर की कहानियाँ देहाती परिवेश को भारतीय ज्ञान परंपरा के एक प्रामाणिक स्रोत के रूप में स्थापित करती हैं तथा IKS (Indian Knowledge Systems) की अवधारणा को साहित्यिक धरातल पर सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं।

बीज शब्द: मिथिलेश्वर, देहाती परिवेश, भारतीय ज्ञान परंपरा, लोकज्ञान, IKS, ग्रामीण जीवन

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें लोकजीवन, परंपरा और अनुभव में गहराई से धँसी हुई हैं। हिंदी कथा-साहित्य में प्रेमचंदोत्तर काल में जिन कथाकारों ने ग्रामीण यथार्थ को ज्ञानात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है, उनमें मिथिलेश्वर का स्थान विशिष्ट है। उनकी कहानियाँ ग्रामीण समाज

को केवल आर्थिक अभाव या सामाजिक पिछड़ेपन के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक और नैतिकता के जीवंत केंद्र के रूप में सामने लाती हैं। इस शोध का उद्देश्य मिथिलेश्वर की चयनित कहानियों के माध्यम से देहाती परिवेश में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध रूपों की पहचान करना है।

देहाती परिवेश और लोकज्ञान की परंपरा

मिथिलेश्वर की कहानियों में देहाती परिवेश केवल घटनाओं की पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि लोकज्ञान का सक्रिय स्रोत है। ग्रामीण समाज में जीवन से जुड़ा ज्ञान पुस्तकों या औपचारिक शिक्षा से नहीं, बल्कि अनुभव, परंपरा और सामूहिक स्मृति से विकसित होता है। जाग चेत कुछ करौ उपाय में रामस्वरूप जैसा किसान खेत, मौसम, वर्षा और सूखे के अनुभव से यह सीखता है कि प्रकृति के साथ टकराव नहीं, बल्कि सामंजस्य ही जीवन को आगे बढ़ा सकता है। उसका यह ज्ञान पीढ़ियों से संचित किसान-बुद्धि का परिणाम है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है।

इसी प्रकार प्रतिनिधि कहानियाँ में चित्रित भूमिहीन मजदूर सामाजिक व्यवहार, श्रम-संस्कार और जीवटता को अपने पूर्वजों के अनुभवों से सीखता है। पूर्ण कहानियाँ (भाग–एक) के हरखू और भोला जैसे पात्र ग्रामीण लोकबुद्धि के प्रतिनिधि हैं, जिनके निर्णय व्यावहारिक होते हैं और जीवन की सच्चाइयों से उपजे होते हैं। इस प्रकार मिथिलेश्वर की कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि देहाती परिवेश में निहित लोकज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंत और व्यावहारिक अभिव्यक्ति है।

श्रम-संस्कृति और अनुभवजन्य ज्ञान

भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रम को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि आत्म-संस्कार और जीवन-बोध का माध्यम माना गया है। मिथिलेश्वर की कहानियों में श्रम-संस्कृति इस अनुभवजन्य ज्ञान का आधार बनती है। जाग चेत कुछ करौ उपाय का रामस्वरूप निरंतर परिश्रम करते हुए असफलताओं से सीखता है और जीवन की कठोर सच्चाइयों को समझता है। उसका श्रम उसे धैर्य, सहनशीलता और विवेक प्रदान करता है। पूर्ण कहानियाँ (भाग–एक) का भोला मजदूर शोषण और अभाव के बावजूद श्रम की गरिमा को बनाए रखता है। उसका जीवन यह दर्शाता है कि श्रम से अर्जित ज्ञान व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्मसम्मानी बनाता है। पूर्ण कहानियाँ (भाग–दो) में हरदेव और सुरेश जैसे पात्र श्रम और संघर्ष के अनुभव से सामाजिक व्यवस्था को समझते हैं। इस प्रकार श्रम-संस्कृति के माध्यम से विकसित ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा के व्यवहारिक और नैतिक पक्ष को उजागर करता है।

प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व

मिथिलेश्वर की कहानियों में प्रकृति ज्ञान की एक सशक्त शिक्षक के रूप में उपस्थित है। ग्रामीण जीवन प्रकृति पर निर्भर है और उसी से सीखता भी है। जाग चेत कुछ करौ उपाय में

सूखा, वर्षा और फसल केवल प्राकृतिक घटनाएँ नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन के निर्णयों को दिशा देने वाले तत्व हैं। किसान पात्र प्रकृति के संकेतों को समझकर अपनी जीवन-रणनीति बनाते हैं। पूर्ण कहानियाँ (भाग–तीन) के गंगाराम जैसे पात्र प्रकृति की सीमाओं को स्वीकार करते हुए संतुलित जीवन जीने का प्रयास करते हैं। खेत, नदी और ऋतु-चक्र ग्रामीण समाज को यह सिखाते हैं कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका सहभागी है। यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा के उस सिद्धांत को सुदृढ़ करती है, जिसमें मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य को सर्वोच्च मूल्य माना गया है।

सामूहिक चेतना और सामाजिक विवेक

देहाती समाज में ज्ञान व्यक्तिगत न होकर सामूहिक होता है। मिथिलेश्वर की कहानियों में पंचायत, गाँव और समुदाय सामूहिक विवेक के केंद्र हैं। जाग चेत कुछ करौ उपाय में किसान समुदाय का संगठित प्रतिरोध यह दर्शाता है कि सामूहिक चेतना अन्याय के विरुद्ध प्रभावी हथियार बन सकती है। प्रतिनिधि कहानियाँ में दलित मजदूरों की सामूहिक पीड़ा सामाजिक जागरूकता में परिवर्तित होती है। पूर्ण कहानियाँ (भाग–दो) में ग्रामीण समाज अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध एकजुट होकर नैतिक निर्णय लेता है। यह सामूहिक विवेक भारतीय ज्ञान परंपरा की उस सामाजिक दृष्टि को उजागर करता है, जिसमें समुदाय को ज्ञान और निर्णय का आधार माना गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और मानवीय दृष्टि

मिथिलेश्वर की कहानियों में ज्ञान की अवधारणा केवल बौद्धिक या सैद्धांतिक स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह मानवीय संवेदनाओं और जीवनानुभवों से गहराई से जुड़ी हुई दिखाई देती है। उनके कथा-पात्रों का ज्ञान पुस्तकीय शिक्षा से नहीं, बल्कि सामाजिक अनुभव, पारिवारिक संस्कार और सामूहिक जीवन-बोध से विकसित होता है। करुणा, सहानुभूति, धैर्य और सहिष्णुता जैसे गुण ग्रामीण जीवन में केवल नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि व्यवहारिक ज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जो व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित और मानवीय बनाए रखते हैं।

मिथिलेश्वर के पात्र गरीबी, शोषण, अभाव और सामाजिक उपेक्षा जैसी विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी मानवीय गरिमा और नैतिक विवेक को बनाए रखते हैं। व अन्याय का प्रतिकार अवश्य करते हैं, किंतु उनका प्रतिरोध अराजक या हिंसक न होकर विवेकपूर्ण और मानवीय होता है। यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा के उस मूल सिद्धांत को उजागर करती है, जिसमें ज्ञान का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन और मानवीय मूल्यों की रक्षा भी है।

ग्रामीण जीवन में विकसित यह मानवीय दृष्टि सह-अस्तित्व, सामूहिकता और नैतिक उत्तरदायित्व पर आधारित है। मिथिलेश्वर की कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा में मानव-केंद्रित सोच सर्वोपरि है, जहाँ ज्ञान करुणा और सहिष्णुता से रहित नहीं हो सकता। इस प्रकार उनके कथा-साहित्य में मानवीय दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा के सशक्त और जीवंत आधार के रूप में उभरकर सामने आती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मिथिलेश्वर की कहानियाँ देहाती परिवेश में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा का सशक्त साहित्यिक रूपांतरण हैं। लोकज्ञान, श्रम-संस्कृति, प्रकृति-बोध, सामूहिक चेतना और नैतिक मूल्य उनके कथा-साहित्य को IKS के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण बनाते हैं। इस प्रकार मिथिलेश्वर की कहानियाँ भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने का एक विश्वसनीय और जीवंत माध्यम सिद्ध होती हैं।

संदर्भ सूची (References)

मिथिलेश्वर: पूर्ण कहानियाँ, भाग–एक, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2015।
मिथिलेश्वर: पूर्ण कहानियाँ, भाग–दो, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2015।
मिथिलेश्वर: पूर्ण कहानियाँ, भाग–तीन, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2015।
मिथिलेश्वर: जाग चेत कुछ करौ उपाय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015।
मिथिलेश्वर: प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2017।